CONSTITUTION (FOURTH AMENDMENT) BILL

PRESENTATION OF REPORT OF JOINT COMMITTEE.

The Prime Minister and Minister of External Affairs (Shri Jawaharlal Nehru): I beg to present the Report of the Joint Committee on the Bill further to amend the Constitution of India.

Mr. Chairman: I understand that a note of dissent is appended to this Report, but it is not appended to the Report as it is usually done. The hon. gentleman who wanted to attach this note of dissent, Shri Surendra Mahanty, of the Rajya Sabha, placed the note in the hands of the Office one day earlier than the conclusion of the consideration of the Report. This is the first instance of its kind. I have never seen a note of dissent appended in this manner—before the Report was completed and finally considered. He has also said that he would like to retain certain parts of his note of dissent only and the rest may be exorcised if the Report takes a particular form. It is very difficult for the Office to tamper with a note of dissent. I, therefore, am not inclined to accept this note in this manner. This is my first impression. I would like that the hon. Speaker takes the entire matter into consideration and passes such orders as he thinks fit. If he accepts the note of dissent, it will be appended to the Report and circulated; otherwise, it will not be treated as part of the Report.

DEMANDS FOR GRANTS FOR 1955-56.

DEMANDS *re* MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS.

श्री जवाहरलाल नेहरू : पहली बात तो मैं बहुत अदब से यह पेश करना चाहता हूं कि न हमारी इच्छा है और न हमारी शक्ति है कि हम सब दुनियां को अपनी मर्जी से चलायें। अकसर लोक-सभा के सदस्य हम से नाराज होते हैं कि यह क्यों नहीं किया, वह क्यों नहीं किया, उस मुल्क में यह आफत क्यों आई और वहां किसी ने गलत बात क्यों की गोया सारी दुनिया हमारे कब्जे में है और हम से सलाह मशाविरा कर के काम किया करती है। जाहिर है, कि यह बात नहीं है। दुनिया तो बहुत बड़ी चीज है, हमारे देश में बहुत सारी बातें होती हैं, जैसे कि हर देश में हुआ करती हैं, जो कि हमारे काबू में नहीं हैं। अगर इस लोक-सभा की शक्ति होती कि जो हमारे मन में है उस को हम एक दम से देश में कर दें, तो हम देश के सारे दुःख खत्म कर देते, सब बातें पूरी हो जातीं और यहां के सब २६, २७ करोड़ लोग खुशहाल होते, उन के लिये काम काज होते और कोई कठिनाई या तकलीफ नहीं रहती। जाहिर है कि हम यह नहीं कर सकते। समय लगता है, काम कठिन है। अगर्चे हम उस रास्ते पर जा रहे हैं, लेकिन समय लगता है इन बातों के करने में। कम से कम मैं तो इस में विश्वास नहीं करता कि इस में आसमान, तारों या ज्योतिष की कुछ जिम्मेदारी है और जो लोग इस में विश्वास रखते हैं वह गालिबन असलियत नहीं देखते, इसी विश्वास में पड़े रहते हैं। तो टीका करनी इस बात की कि वहां यह क्यों नहीं हुआ और वहां क्यों यह खराबियां हैं, ठीक है, खास कर जनता के द्वारा। लेकिन जो बात हमें देखनी है वह यह नहीं कि हमारे दिमाग की बातें, हमारे स्वप्न, हमारे ख्वाब क्यों नहीं पूरे हुए, बल्कि यह कि जिधर हम जा रहे हैं वह ठीक रास्ता है या नहीं। मुमकिन है कि हल्के हल्के काम हो, आखिर दुनियां में कोई बात हो, कोई मुल्क तरक्की की तरफ अपने को ले जाय, तो यहां कोई ऐसा नहीं है जो न चाहे कि और देशों की तरक्की न हो। जरूर होनी चाहिये, जल्दी से जल्दी होनी चाहिये, लेकिन अगर आप मुझसे कहें कि मैं इस बात को कहूं कि वह जल्दी हो जाय, तो मैं ऐसा कहने के लिये तैयार नहीं हूं। इस के माने यह नहीं है कि हमें अच्छा नहीं लगता है, यकीनन अच्छा लगता है, लेकिन हो सके तब ना। अगर हम ऐसा कहते हैं तो अपने को

असलियत से हटाते हैं कि क्या हो सकता है और क्या नहीं और महज एक ख्वाब की दुनियां में हो जाते हैं । मैं अदब से अर्ज करूंगा कि इस तरह की बातें कहने से कोई फायदा नहीं होता । हमें आज कल के प्रश्नों को देखना है, और आज कल के प्रश्नों और सवालों को देख कर उन को हल करने की कोशिश करनी है । उन को हल करने में बहुत सी कठिनाइयां हैं, इस वास्ते हम उन को हल नहीं कर सके हैं, सारी दुनिया के विद्वान कोशिश कर रहे हैं फिर भी उन को हल नहीं कर सके, और दुनियां एक गलत रास्ते पर चली जाती है । अगर हमारी लोक-सभा के साथी जो उस पार बैठे हैं समझते हैं कि अगर दुनियां उन की राय पर चले तो सब सवाल हल हो जायें, तो मुमकिन है कि यह बात हो लेकिन कठिनाई यह है कि उन की बात पर लोग चलने को तैयार नहीं होते हैं, मैं क्या करूं ? या तो एक खास राय पर सारी दुनियां चले जिस से सारे सवाल हल हो जायें, इधर या उधर, लेकिन एक राय पर आज दुनियां चलने को तैयार नहीं है । अलग अलग देश अलग अलग राय पर चलते हैं जिस की वजह से कशमकश होती है, लड़ाई, दंगे और फिसाद होते हैं । तो इन सवालों को देखने में हमें इस बात को याद रखना चाहिये कि अगर मैं एतराज करूं भी तो किस बात पर ? मैं यह इस लिये नहीं कहता कि जो साउथ ईस्ट एशिया के लोग हैं या वेस्ट एशिया के लोग हैं उन की चालें हलकी हैं बल्कि इस लिये कि चालें उलट गई हैं । एक हमारे माननीय सदस्य ने, शायद श्री खडेकर ने, याद दिलाया कि मैं ने कहा था **रिवर्सल आफ हिस्ट्री** । यानी जो अमरीका की फौजी मदद पाकिस्तान में आई थी उस के लिये मैं ने कहा था कि यह **रिवर्सल आफ हिस्ट्री** है । उन्होंने कहा कि अगर हिन्दस्तान के लिये मैं ऐसा कहता तो सही हो सकता था, लेकिन पाकिस्तान के लिये वह सही नहीं था । मैं उन की बात से मुत्तफिक नहीं हूं । हिन्दुस्तान ने यह हर्कत बहुत दफे की है, हिन्दुस्तान का दामन कोई साफ नहीं रहा है, हजार दफे झुका है, गंदा हुआ है, काफी कीचड़ उछला है । लेकिन सवाल यह है कि आज कल उस का दामन कैसा है ? इतिहास का सवाल यहां पर नहीं है । बहरहाल जो मैं ने **रिवर्सल आफ हिस्ट्री** की बात कही थी वह हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के लिये नहीं कहा था । मैं ने कहा था कि एशिया बाज हिस्सों में अब योरप, अमरीका वगैरह मुलकों की हुकूमत से अलग जरूर हो रहा है । एशिया जाग रहा है, और इतिहास की यह तेज रफ्तार उसे एक तरफ ले जा रही है, यानी आजादी की तरफ । तो मेरा मतलब यह था कि अगर यहां पर कोई एशिया का हिस्सा बजाय आजादी की तरफ जाने के दूसरी तरफ जाय तो वह दरिया का बहाव उलट जाना है । मेरे दिल में कोई शक नहीं है कि किसी मुल्क का किसी दूसरे मुल्क से फौजी मदद पाना अपनी आजादी को खत्म कर देना है । इस सिलसिले में मैं ने यह कहा था और इसी सिलसिले में मुझे यह बात परेशान करती है, और किसी कदर यह ख्याल दिक करता है, कि आज जो बातें साउथ ईस्ट एशिया और वेस्ट एशिया में हो रही हैं उन के लिये कहा तो यह जाता है कि वह मुल्कों को आजाद करने के लिये हो रही हैं, लेकिन असल में वह मुल्क बड़े मुल्कों के दबाव में आते जाते हैं । इस मामले में मैं नहीं चाहता कि मैं कुछ दूसरे बड़े मुल्कों की निसबत नुक्ताचीनी करूं या निन्दा करूं क्योंकि इस से कुछ लाभ नहीं होता है, और ख्वाहमख्वाह के लिये लोग चिढ़ते हैं, लेकिन साफ बात यह है कि श्री मुकर्जी ने बड़े जोरों से कहा कि प्राइम मिनिस्टर हमेशा मुकाबिला करते हैं दो बार ब्लाक्स का, बार ब्लाक तो एक ही है, दूसरे का दामन साफ है । बार का शब्द आप छोड़ दें । हालत तो यह है कि इस वक्त दुनियां में दो बहुत बड़े, बहुत शक्तिशाली मुल्क हैं, इस में मुझे कोई शक नहीं है, और वह दोनों एक दूसरे से डरते हैं, घबराते हैं । दोनों इस अन्देशे में कि शायद दूसरी तरफ से लड़ाई शुरू हो जाय, लड़ने की तैयारी करते हैं । जब दूसरे को खौफ होता है तो वह पहले से भी ज्यादा तैयारी करता है और उस को देख कर पहले वाला और भी ज्यादा तैयारी करने

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

लगता हैं। आज हम इस पंच में पड़ गये हैं और इस लिये वह बड़े मुल्क छोटे मुल्कों को अपने साथ में लाना चाहते हैं, उस तरह से नहीं जैसे पहले लाते थे, अपना साम्राज्य बढ़ा कर, वह जमाना गया। लेकिन दूसरी तरह से अपने साथ में लाना चाहते हैं ताकि अगर लड़ाई हो तो आने वाली लड़ाई में वह उन से फायदा उठायें। इसके दो जुज हैं और वह यह कि दूसरे मुल्कों को अपने साए में लाना चाहते हैं ताकि दूसरे मुल्क उनको अपने साए में न ले जाएं। इस कशमकश में चला जाता है और फिजा खराब होती जाती हैं। इस में किसी को बुरा भला कहने का सवाल नहीं हैं। पंच शील का जिक्र हुआ। पंच शील का खास मकसद यह हैं कि युद्ध रूके। इसके साथ ही साथ दूसरे मुल्कों के अंदरूनी मामलों में दखल न देना, बाहिरी हमला न करना। नान इंटरफीयरेंस इन दी एफेयर्स आफ दी अदर कंट्रीज बड़ी जरूरी बात हैं, युद्ध रोकने की बात हैं क्योंकि असलियत यह हैं कि इस वक्त इंटरफीयरेंस बहुत ज्यादा होती हैं, बड़े जोरों से होती हैं, जाबते से होती हैं और बेजाबते से होती हैं, हर तरह से होती हैं, हर तरफ से होती हैं, दोनों फरीकों की तरफ से होती हैं।

हम अकसर सवाल उठाते हैं, क्रिश्चयन मिशनरीज का। हमारे लोक-सभा के कुछ लोग उनकी कार्रवाइयों से बहुत परेशान होते हैं। वे यह बात भूल जाते हैं कि क्रिश्चएनिटी हिन्दुस्तान का एक बहुत पुराना मजहब हैं और हमें उन्हें यहां रहने का पूरा मौका देना हैं और यह हमारे कान्स्टीट्यूशन (संविधान) में भी माना गया हैं और यह हमारी नीति भी हैं। हां अगर पोलिटिकल ढंग से कोई शख्स पर्दे के पीछे कुछ करें तो दूसरी बात हैं। इस तरह से कई क्रिश्चयन मिशनरीज की चर्चा होती हैं. लेकिन आजकल जो असल में मिशनरीज हैं वह दूसरी किस्म के हैं। मैं बाहर के मिशनरीज के बारे में कह रहा हूं अन्दरूनी लोगों के बारे में नहीं कह रहा हूं क्योंकि अन्दर हर एक को हक हैं कि वह अपने विचारों का शान्तिमय तरीकों से प्रचार करें। लेकिन बाहर के लोग जब आकर ऐसा करते हैं तब वह जो पंच शील का असूल हैं टूटता हैं। याद रखिये जो लोग बाहर के आते हैं चाहे एक तरफ के हों चाहे दूसरी तरफ के, कम्युनिस्ट शास्त्र को पढ़ाने आते हों या एंटी कम्युनिस्ट शास्त्र को पढ़ाने आते हों, तरीके चाहे उन के अलग अलग हों लेकिन दोनों आकर बड़े जोरों से हमें पढ़ाने की कोशिश करते हैं। मैं चाहता हूं कि वे हमें पढ़ाएं माकूल चीजें और नामाकूल चीजों में हम नहीं पड़ना चाहते। आखिर किताबों से भी हम पढ़ सकते हैं। विचारों को हम रोक नहीं सकते लेकिन मुझे इस बात पर एतराज हैं कि बाहर से इस तरह का हमारे ऊपर दबाव डालने के लिए हमारे मुल्क में लोग आएं चाहे वह कम्युनिस्ट हों चाहे एंटी कम्युनिस्ट हों, चाहे वे रूस से आएं, चाहे अमरीका से आए और चाहे व चीन से आएं, इस में मुझे एतराज हैं और मैं यह नहीं चाहता। मैं यह चाहता हूं कि वे दोस्ताना तौर पर हमारे पास आएं, हमारे साथ बातें करें और बहस करें, इस में मुझे कोई एतराज नहीं हैं। आप जानते भी हैं कि हमारे यहां बहुत लोग आ भी रहे हैं। लेकिन इस नियत से अगर कोई आए कि हमारे अन्दरूनी काम में चाहे वह स्यासी हो, चाहे आर्थिक हो चाहे कोई और हो और चाहें कि हम इधर से उधर जाए या उधर से इधर जाएं तो यह बात झगड़े की हैं, चाहे अच्छी हैं चाहे बुरी हैं, लेकिन झगड़े की हैं और इस से झगड़ा पैदा होता हैं और फिजा खराब होती हैं। हम चाहते हैं कि प्रोफेसर आएं, बातें करें, लेक्चर दें और लोग जो कहते हैं सुनें। लेकिन पंच शील का जो बुनियादी उसूल हैं अगर उसको ईमानदारी से स्वीकार कर लिया जाए और वह यह हैं कि बाहर के लोग दखल न दें, अगर आप इसको मान लेते हैं और दुनिया मान लेती हैं तो यकीनन आज जो झगड़े हैं उनमें से ९० फीसदी हल हो सकते हैं, इस में कोई शक की बात नहीं हैं। इस मोटी बात को याद रखिये। मैं तो बहुत अदब से उन मुल्कों से जो कि इस तरह से अपने मिशनरीज

भेजते हैं कहूंगा कि वह जमाना गुजर गया और अब उनका उलटा असर होता है जिस से न तो उनको फायदा होता है और न किसी और को, खाली झगड़ा ही बढ़ता है। आज कल मिशनरीज से काम नहीं चलेगा बल्कि जो कोई मुल्क कुछ कर के दिखाएगा और वह अच्छी बात होगी तो उसका असर दुनिया पर अच्छा होगा, इस में कोई शक की बात नहीं है। हम जो अच्छी बातें अंग्रेजों के मुल्क में देखते हैं और जो हमें अच्छी लगती हैं उनका हमारे ऊपर असर होता है और मुमकिन है उनकी हम नकल भी करें। हम ने अमरीका में जा कर देखा कि उन्होंने बड़ी तरक्की की है और हमारे ऊपर असर हुआ है। अगर हम अमरीका सीखने जाएं उन से सीखेंगे, उन के लेक्चरों से और देखकर। इसी तरह से रूस जाएं, जो रूस की बातें हमें पसन्द आएंगी उनका हम पर असर पड़ेगा। असल बात यह है कि वह जमाना गया कि किसी की कागजी और हवाई बातों पर चला जाए। आजकल जो कोई मुल्क कुछ काम करके दिखाएगा, अपने मुल्क की तरक्की कर के दिखाएगा उस मुल्क का यकीनन असर दूसरों पर पड़ेगा, चाहे वह रूस हो, चाहे चीन हो, चाहे अमरीका हो चाहे कोई और मुल्क हो। जिस मुल्क के तरक्की करने का तरीका हमारी समझ में आ जाएगा उसका हमारे ऊपर असर होगा। यह बात कि इस खिड़की से देखा जाए और उस खिड़की से न देखा जाए, गलत है। अगर हम ने किसी मुल्क पर असर डालना है तो हम सिर्फ पंच शील से ही नहीं, या बहस कर के ही नहीं और और कोई ऐसी बात कर के नहीं डाल सकते बल्कि मुल्क में जो काम करते हैं उन से डालेंगे। अगर इस वक्त दुनिया के अक्सर लोग हिन्दुस्तान आ रहे हैं---बड़े बड़े आदमी आ रहे हैं और बहुत से लोग जिन का अखबार में नाम नहीं आता, छोटे दलों में आते हैं, डेपुटेशंस आते हैं, वे काफी तादाद में क्यों आ रहे हैं। यह इसलिए है कि दुनिया में हमारी शोहरत है कि हिन्दुस्तान तरक्की कर रहा है, तेजी से बढ़ रहा है जिस का कि उन पर बहुत असर पड़ा है। लेकिन इत्तिफाक की बात यह तक नहीं पहुंची और दुनिया तक पहुंच गई है। ये बिल्कुल नावाकिफ हैं। वे ऐसी कोई कोठड़ी में दरवाजा बन्द कर के बैठे हैं कि जरा भी रोशनी अगर अन्दर आती है तो सुराखों में भी रूई डाल देते हैं और उनको बन्द कर देते हैं। अजीब हालत है। चुनांचे हिन्दुस्तान का जो असर दुनिया पर हुआ है वह मेरी स्पीचों के कारण नहीं हुआ है, ना ही लोक-सभा ने जो प्रस्ताव पास किए हैं और जो कानून बनाए हैं उनके कारण हुआ है। हिन्दुस्तान के लोग क्या करते हैं, जिस तरह से दिखाते हैं कि एक मजबूत मुल्क हैं, मेहनती हैं, तरक्की कर रहे हैं, आगे बढ़ रहे हैं हम मुल्क को ऊंचा कर हैं, इन सब बातों से असर हुआ है।

हमारे कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स हैं। इन का असर दुनिया पर हुआ है और शायद बहुत ज्यादा हुआ है। वैसे तो बड़ी बड़ी और भी चीजें बन रही हैं जैसे भाखड़ा, दामोदर घाटी योजना जिन का असर दुनिया पर हुआ है लेकिन सब से ज्यादा कम्युनिटी प्रोजेक्ट्स से हुआ है, क्योंकि यह चीज एक ऐसी है जो खास तौर पर एशिया के लिए मौजूं हैं, पिछड़े हुए मुल्कों के लिए मौजूं हैं। एशिया के कितने ही मुल्कों के लोगों ने इन को आकर देखा है। हम आजकल परेशान हैं, हमारे पास कम लोग हैं। चारों तरफ से मांग आ रही है। एशिया के आधे मुल्कों से हमारे पास मांगे आई हैं और यह हमारी पालिसी की वजह से नहीं है बल्कि हम ने जो तरक्की की है उसकी वजह से है।

मैं फिर पंच शील पर आता हूं कि यह जो पंच-शील नाम रखा गया एक बहुत पुराना नाम है और पंच शील के एक दूसरे माथने भी हैं। इंडोनेशिया में उनकी हकूमत पंच शील पे मुबनी है और वह उनके दूसरे पंच शील हैं। यह पुराना शब्द है, अच्छा भला है, मौजूं है, इस लिए रखा गया है। इसके असल में माथने यह हैं कि एक मुल्क दूसरे मुल्क के अन्दरूनी मामलों में दखल न दे, बेजावता दखल न दे, जबरन दखल न दे, पैसे से, फौजों से या किसी और जरिये से दखल न दे। लेकिन जहां एक

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

पड़ता हैं तो वहां पर दबाव नहीं रहता और न ही डर की भावना ही रहती हैं और आजादी से एक चीज बढ़ती हैं जैसे कि एक पौदा बढ़ता हैं या एक दरख्त बढ़ता हैं । दो एक बातें अशोक मेहता जी ने कही थीं, उनका मैं जिक्र कर दूं । उन्होंने "नेफा" यानी नार्थ ईस्ट फ्रांटियर एजेंसी के बारे में जिक्र किया था । उन्होंने कहा कि वहां पर तीन बलवे हुए, अन्दरूनी झगड़े हुए, इस साल भर के अन्दर, और हम लोग वहां नहीं जाने पाये । उन्होंने कहा कि वहां का बहुत खराब हाल हैं, वगैरह वगैरह । मुझे यकायक याद नहीं आता कि वह कौन तीन झगड़े हैं जिनका उन्होंने जिक्र किया हैं । आप याद रखें कि वहां पर किसी हुकूमत का इन्तिजाम नहीं रहा हैं । हजारों सैंकड़ों वर्षों के बाद वहां पर कोई गवर्नमेंट का इन्तिजाम किया जा रहा हैं । और मुझे शक हैं कि दुनिया में कहीं भी इतनी शान से और इतनी शान्ति से इन्तिजाम शुरू किया गया हो जैसा कि इस इलाके में किया जा रहा हैं । मैं अशोक मेहता जी से इस तरह की कोई मिसाल चाहता हूं । हमने वहां पर इतनी शान्ति के साथ इन्तिजाम करना शुरू किया हैं कि मुझे दुनिया में इसकी कहीं कोई मिसाल नहीं मिलती । मैं चाहता हूं कि वह मुझे ऐसी कोई मिसाल दें ।

आप कहते हैं कि वहां पर तीन झगड़े हुए । तीन झगड़ों के बारे में तो मुझे मालूम नहीं, लेकिन एक झगड़ा जरूर हुआ हैं । यार्मटिंग गांव वालों ने पांगशा गांव के एक आदमी को मार दिया । वह पहाड़ी डाकिया था । पांगशा गांव वालों ने भी जोश में आकर यार्मटिंग गांव पर धावा बोल दिया और वहां पर ४० आदमी मार दिये । यह गांव वालों का आपस का झगड़ा था, इसमें गवर्नमेंट का कोई सवाल नहीं था । याद रखिये कि ये वे जगहें हैं जहां पर कि कल परसों तक हैड हंटिंग होता था । वहां पर सिर काट कर टांग देने का एक मामूली खेल था । वह बमुश्किल खत्म हुआ हैं । जो झगड़ा हुआ वह यह था कि एक आदमी एक गांव वालों ने मार दिया, दूसरे गांव वालों ने आकर उस गांव के चालीस पचास आदमी मार दिये । यह बहुत बुरा हुआ । लेकिन यह दो गांवों का झगड़ा था जो कि पहले से चला आता था । इसके लिए अशोक मेहता जी ने गवर्नमेंट पर इल्जाम लगाया । हां, वह इल्जाम लगा सकते हैं कि क्यों उन लोगों को इतना ऊंचा नहीं उठाया गया कि वह ऐसा न करते, या यह कि एक एक गांव में गवर्नमेंट का इन्तिजाम क्यों नहीं था । लेकिन अगर आप गौर करें तो यह एंतराज बहुत जा नहीं हैं ।

अभी तीन चार रोज की बात हैं कि हमारे दो तीन आदमी जा रहे थे । यकायक जंगल में उन पर हमला हुआ और उनमें से एक या दो आदमी मारे गये । अभी पूरे वाकयात नहीं आये हैं । तो ऐसे इलाके का, जो कि इतना पिछड़ा हुआ हैं और जहां इस तरह के लोग रहते हैं, आप आसाम हिल्स वालों से मुकाबला नहीं कर सकते । आसाम हिल्स के लोग बहुत आगे बढ़े हुए हैं । लेकिन जहां यह झगड़े हुए वहां की हालत ऐसी नहीं हैं । आप अगर वहां जाना चाहते हैं तो मैं आपको दावत देता हूं कि आप वहां जायें । लेकिन मैं आपको एक बात बतला दूं । पिछली दफा, मैं अपनी याद से कह रहा हूं, कुछ आपकी पार्टी के लोगों ने वहां जाने को कहा था । लेकिन जो साहब वहां जाना चाहते थे वह वहां पर झगड़ा कराने के लिए जाना चाहते थे, वह इस किस्म की तकरीरें कर रहे थे । अब आप याद रखिये कि दिल्ली में अगर ऐसी स्पीचेज की जाय तो उनका कोई असर नहीं होता । लेकिन उस इलाके में उनका बहुत बुरा असर हो सकता हैं । नार्थ ईस्ट फ्रांटियर एजेंसी के लोगों ने अभी तक कोई स्पीचेज नहीं सुनी हैं । अगर वहां पर आप अपनी पालिटिक्स ले जायें और घर घर जाकर स्पीचेज दें तो मैं नहीं कह सकता कि उसका क्या असर हो । हो सकता हैं कि जो स्पीचेज दी जायें उन्हीं का हैंड हंटिंग हो जाय । उन स्पीचेज का यह भी असर हो सकता हैं । तो यह खतरनाक चीज हैं । उनसे कहा गया कि आप बखुशी आइये, लेकिन उन्होंने दूसरा सवाल पैदा किया । सिर्फ उनके जाने का सवाल नहीं था, उसके साथ ही उनके जाने का इन्तिजाम भी करना था । उन्होंने मांग

की थी कि दस पन्द्रह फौज के सिपाही उनकी देखभाल करने को उनके साथ भेजे जायं, क्योंकि उनको सौ पचास मील अन्दर जाना था। हमने कहा कि इस वक्त तो हम कोई इन्तिजाम नहीं कर सकते। तो सिर्फ दो एक आदमियों का जाकर देख आने का सवाल नहीं था। हम तो चाहते हैं कि लोग वहां जाकर देखें और खुद अन्दाजा करें, और फिर हमको बतलावें कि क्या करना चाहिए।

उन्होंने काश्मीर का जिक्र किया और जो कुछ काश्मीर के बारे में बहुत सी बातें कहीं उनको सुनकर मुझे ताज्जुब हुआ। उन्होंने कहा कि "दी सोल आफ काश्मीर इज बीइंग सफोकेटेड"

The soul of Kashmir is being suffocated

जाहिर है कि काश्मीर दूर है। मैं हिन्दुस्तान की निसबत भी यह नहीं कह सकता कि वहां सब जगह ठीक ही हो रहा है। लेकिन काश्मीर के बारे में मैं उनसे बहुत अदब से यह कहना चाहता हूं कि इन दो तीन सालों में काश्मीर ने बहुत तरक्की की है। हर तरफ तरक्की की है। और यह न समझिये कि हमने जो पैसा दिया है उसी से तरक्की हुई है। यह ठीक है कि हमने कुछ पैसा दिया है, पहले भी दिया था और अब भी दिया है, लेकिन सिर्फ पैसे से बहुत काम नहीं होता। जबतक लोग उस पैसे को ठीक तरह से इस्तेमाल करके आगे बढ़ने की कोशिश न करें तब तक कुछ नहीं हो सकता। यह ठीक है कि किसी कदर हमारी मदद से वह तरक्की हुई है, और अगर उसके बारे में मालूम करना है तो आप वहां के लोगों में जाकर देखिये कि वे उसकी तारीफ कर रहे हैं या नहीं, क्योंकि उससे उनको ही फायदा हुआ है। इसमें कोई शक नहीं कि लोक सभा के बहुत से सदस्य वहां गये होंगे और जो कुछ वहां हो रहा है उसको देखा होगा। डा० लंका सुन्दरम भी वहां गये थे और जो कुछ उन्होंने देखा उसकी बहुत लम्बी रिपोर्ट मेरे पास भेजी। और उन्होंने उस काम की बहुत तारीफ की। जाहिर है कि उन्होंने ऐसा किसी के कहने से नहीं किया। लेकिन बदकिस्मती से हमारे अशोक मेहता जी वहां गये तो उनको वहां कुछ नहीं दिखलायी दिया।

एक बात मैं बहुत अदब से अर्ज करूंगा। उन्होंने अपनी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी का जिक्र किया। प्रजा सोशलिस्ट पार्टी हिन्दुस्तान की एक मुअज्जज और बड़ी पार्टी है। लेकिन उस पार्टी ने जो रंग काश्मीर में जमाया है वह एक नया ही रंग है। जो लोग कल तक प्रजापरिषद में थे वे ही आज प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में हैं। प्रजापरिषद जो निहायत कम्युनल संस्था थी, उसके मेम्बर टोपी बदल कर उधर से इधर आ गये हैं। अगर कोई यह समझे कि ऐसा करने से उनका दिमाग बदल गया होगा, तो यह गलत है।

श्री अशोक मेहता : That is not true. जो कल तक नेशनल कानफरेंस में थे वह आज प्रजा सोशलिस्ट पार्टी में हैं।

श्री जवाहरलाल नेहरू : और प्रजापरिषद का कोई नहीं है?

श्री अशोक मेहता : प्रजापरिषद का कोई सदस्य नहीं है।

श्री जवाहरलाल नेहरू : क्या अर्ज करूं। लेकिन इतना मैं कह सकता हूं कि वहां पर जो प्रजा सोशलिस्ट पार्टी है उसके उसूल अलग ही हैं, उसके सिद्धान्त कुछ अलग ही हैं। और मैं अदब से अर्ज करूंगा कि कई इंटरनेशनल मामलों में तो उन्होंने हिन्दुस्तान की शान को बढ़ाया नहीं है। बल्कि जो हिन्दुस्तान के दुश्मन हैं उनको अपने ख्यालात से मदद पहुंचाई है। तो यह मुश्किल हो जाता है। मैं तो कहता हूं कि काश्मीर का दरवाजा बन्द नहीं है। काश्मीर में लोग आया जाया करते हैं। पारसाल कोई ३०,००० टूरिस्ट वहां गये थे और इस साल भी जायंगे। उसको सब कोई देख सकता है। लेकिन मैं एक पेंच में पड़ जाता हूं क्योंकि वहां पर काश्मीर की गवर्नमेंट है जिस के ऊपर वहां की जिम्मेदारी है, और उसमें हम बहुत दखल नहीं दे सकते। यह ठीक है कि वे हमारे

[श्री जवाहरलाल नेहरू]

दोस्त हैं और हम उनको सलाह दे सकते हैं, लेकिन हम उनके काम में ज्यादा दखल नहीं दे सकते। हम अपने यहां की स्टेट्स के काम में भी एक हद तक ही दखल दे सकते हैं। ज्यादा दखल देना कांस्टीट्यूशन के भी खिलाफ होगा, और भी किसी उसूल के खिलाफ होगा। काश्मीर का सवाल ज्यादा पेचीदा है। वह एक इंटरनेशनल सवाल हो गया है। वहां पर लड़ाई हुई, वहां पर जासूस आते हैं और अपना काम करते हैं। तरह तरह की बातें होती हैं। वहां की हुकूमत की जिम्मेदारी वहां की गवर्नमेंट की है। वहां के मामलात में बहुत दखल देना कोई सही बात नहीं होगी। क्या हम उन पर हुक्म चलावें? अव्वल तो हमको ऐसा करने का अधिकार नहीं है, और अगर हम ऐसा करें भी तो उसके लिए जिम्मेवार कौन होगा? इसलिए यह जरूरी है कि जो वहां है उसी की जिम्मेदारी रहे। हम उनको थोड़ी सलाह दे सकते हैं। और अगर वे हमारी सलाह लें तो हमको खुशी होगी।

मुझे शेख अबदुल्ला की गिरफ्तारी से रंज हुआ। यह सही है कि डेढ़ बरस हुआ शेख अबदुल्ला ने बहुत गलती की, और उससे अपने को और काश्मीर को बहुत नुक्सान पहुंचाया। लेकिन गलती हर एक कर सकता है। इससे मेरे दिल में जो उनकी मुहब्बत थी उसको धक्का लगा, लेकिन वह कम नहीं हुई, क्योंकि आखिर शेख अबदुल्ला ने काश्मीर के इतिहास में बड़ा हिस्सा लिया कि जो जा नहीं सकता है और इतिहास का हिस्सा है, लेकिन इतिहास का हिस्सा जो होता है वह भी गलती कर सकता है। फिर भी मैं काश्मीर में होता तो मैं अपनी जिम्मेदारी पर क्या करता, वह दूसरा सवाल है। मैं तो वहां पर नहीं था, वहां पर जो कुछ हुआ उसकी मुझे इत्तिला हुई और उस को सुन कर मुझे रंज हुआ। मुझे तो खुशी होगी जिस दिन शेख अबदुल्ला छोड़ दिये जांय, लेकिन मैं इस जिम्मेदारी को नहीं ले सकता कि मैं इन बातों पर अपना हुक्म चलाऊं, जब कि इन बातों की जिम्मेदारी वहां की गवर्नमेंट पर है। मैं एक बात और बताऊं कि इस सिलसिले में यहां डेढ़ वर्ष पहले जो गिरफ्तारियां हुई थीं, उनमें शायद तीन या चार शख्स गिरफ्तार हैं, यानी शेख अबदुल्ला और दो, तीन और लोग, और यह दो तीन जो हैं यह शेख अबदुल्ला के साथ खिदमत करने को हैं और इसलिए कि वह अकेले नहीं रहें। आप सब लोग हंसने लगे। वह तो उनके साथी हैं। मतलब यह है कि जो असल में उनमें मशहूर आदमी हैं, वह शेख साहब हैं, मतलब यह कि जो इम्पोर्टेंट आदमी थे, वह सब छूटे हुए हैं और मुझे तो खुशी हो अगर शेख साहब छोड़ दिये जायं लेकिन जैसा मैंने पहले कहा मैं अपने उपर इसकी जिम्मेदारी नहीं ओढ़ सकता हूं और यह मुनासिब नहीं मालूम होता कि जो हुकूमत इस बोझे को उठाये हुई है, मैं उसकी मर्जी के खिलाफ कुछ करूं, उलट पुलट करूं। हमें बहुत सारी बातें अपने प्रदेशों और सूबों की बर्दाश्त करनी होती हैं, और ऐसी बातें बर्दाश्त करनी होती हैं जो कि बहुत अच्छी नहीं होती हैं, लेकिन क्या किया जाय, आखिर वह एक जिम्मेदार हुकूमत होती है। लेकिन इतना मैं जरूर कहूंगा कि यह जो कहा गया है कि The soul of Kashmir is being suffocated यह मैं मानने को बिलकुल तैयार नहीं हूं। मैं तो यह कहूंगा कि जितनी खुशहाली से वहां पर एक 'सोल' खुलती है और दबती नहीं है, उस तरह से एक जमाने से वहां नहीं हुआ है। अब मैं सिर्फ एक दो बातें मुख्तसर में कह कर खत्म करूंगा।

श्री अशोक मेहता ने बहुत जोरों से कहा कि सेंट्रल अफ्रीकन फेडरेशन क्यों बुलायी गयी? मैं उनसे कहूं कि उसको इसलिए बुलाया गया कि हम एक शानदार लोग हैं और हम फर्क नहीं करते हैं। उसको इसलिए बुलाया गया था कि हमने तय किया था कि हम एक उसूल बनायेंगे और उसके लिए हमने सब लोगों को चाहे हमें कोई पसन्द हो या न हो, सबको बुलाया। अब अगर हम लोगों को उसमें बुलाने के लिए कोई उसूल रखते तो यही होता कि हम जिसे पसन्द करते हैं उसे बुलाते हैं और जिसे नापसन्द करते हैं उसे नहीं बुलाते हैं। अब अगर कोई आता है तो ऐसा करने ...

कोई नुकसान नहीं करता, और अगर नहीं आता तो उनको घर पर रहना मुबारिक हो। हां एक जगह आपने जरूर इशारा किया था कि साउथ अफ्रीका को क्यों नहीं बुलाया गया ? उसके लिए मैं कहूंगा कि जाब्ते से उसके ताल्लुकात एशिया से दूसरे किस्म के हैं, वे जाब्ते से और जगह भी हो सकते हैं। डा० लंका सुन्दरम् ने कुछ कम्बोडिया कमिशन के बारे में कहा, कम्बोडिया की हुकूमत ने खुद उनका जवाब दे दिया है, वहां की हुकूमत ने इस बारे में हमसे कोई शिकायत नहीं की और वहां के प्रिंस का यहां आना ही जाहिर करता है कि उन्हें हम से कोई शिकायत नहीं थी। मुझ से पूछा गया है कि संगांव में जो सिविल वार हो रही है, उसमें क्या बनेगा ? अब मैं क्या बताऊं, क्या कहूं, कुछ कह नहीं सकता, उस जगह के हालात को देख कर मुझे तो "Sullivan & Gilbart Opera" याद आता है। एक अजीब तमाशा है। उन्होंने कहा कि वहां कहा गया था कि हमारी सलाह से मशविरे से कोई उनका इम्मिग्रेशन बिल रक्खा गया था*।

Are you following me, Dr. Lanka Sundaram?

Dr. Lanka Sundaram: May I interrupt the Prime Minister? If is not on your advice; I said that your consent was obtained for the provisions of the Amendment Bill.

Shri Jawaharlal Nehru: That is what was stated by the Ceylon Government.

Dr. Lanka Sundaram: That is right.

Shri Jawaharlal Nehru: It is not correct. What happened was this. I am not going into the exact details. It is not a question of a Bill or a part of a Bill being discussed by us. When the Prime Minister came here, it was considered in the context of the then agreement that we signed. It is part of that. For instance, as I said previously, I said, first a register should be made of all the people of Indian descent in Ceylon and of all Indians present in Ceylon. They may have gone there for one month or two months or five months. Having made this register you know who is there. The question of their nationality can be decided later. You know exactly who is there. If any person is found there later who is not on the register, then, the presumption arises or may arise that he has come in as an illegal immigrant. It can be rebutted. It was on the basis of a register being prepared that we said that if a person is not found in this register, you may put the burden of proof on him to show how he came in. That is what we agreed to. Now, it makes all the difference in the world by putting the burden of proof on the individual without preparing that register. If there is a register, there is something to go by. Outside that you may presume that somebody has come in anew. But, if you pick up some one and ask him to prove that he is not an illegal immigrant, it becomes very difficult for a poor man. We had agreed to certain things in a certain context. We have said that the matter, of course, is for the Ceylon Government to decide, but the matter should be referred to our High Commissioner so that he may be able to find out if he has any comment with regard to any particular man. That is the position.

I think Dr. Lanka Sundaram or some one else asked me whether the Prime Minister of Pakistan assured that he had withdrawn the reference to the Security Council in regard to Kashmir. No. Certainly not. He has given no assurance of this kind. I have not asked, nor do I intend to ask him. It is not a kind of assurance that one demands from some one else. Apart from that, I do not know how such things are withdrawn. The fact is that no action has been taken for a long time. When any talks take place, they are independent of any Security Council or any outside authority.

Mr. Chairman: I shall now put to the House the cut motions.

The cut motions were negatived.

*English version of this speech is appearing in Appendix VIII, annexure No. 61A

Mr. Chairman: The question is:

"That the respective sums not exceeding the amounts shown in the fourth column of the Order Paper, be granted to the President, to complete the sum necessary to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of the following heads of Demands entered in the second column thereof:

Demands Nos. 21, 22, 23, 24, and 113."

The motion was adopted.

[*The motion for Demands for Grants which were adopted by the Lok Sabha are reproduced below.*—Ed. of P.P.]

DEMAND NO. 21—TRIBAL AREAS.

"That a sum not exceeding Rs. 5,34,11,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of 'Tribal Areas'."

DEMAND NO. 22—EXTERNAL AFFAIRS.

"That a sum not exceeding Rs. 6,21,00,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of 'External Affairs'."

DEMAND NO. 23—STATE OF PONDICHERRY

"That a sum not exceeding Rs. 1,89,83,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of 'State of Pondicherry'."

DEMAND NO. 24—MISCELLANEOUS EXPENDITURE UNDER THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS.

"That a sum not exceeding Rs. 1,88,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of 'Miscellaneous Expenditure under the Ministry of External Affairs'."

DEMAND NO. 113—CAPITAL OUTLAY OF THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS.

"That a sum not exceeding Rs. 22,92,000 be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1956, in respect of 'Capital Outlay of the Ministry of External Affairs'."

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Saturday the 2nd April, 1955.